RESEARCH REVIEW JOURNALS
Volume-04
Issue-08
August-2019
ISSN: 2455-3085 (Online)
RESEARCH REVIEW International Journal of Multidisciplinary
www.rrjournals.com[Peer Reviewed Journal]

जनजातीय युवाओं पर आधुनिकता का प्रभाव

डॉ0 श्याम कुमार

अतिथि प्रवक्ता, (समाजशास्त्र),राजकीय महाविद्यालय अगरोड़ा, टिहरी गढ़वाल, उत्तराखण्ड।

प्रस्तावना

जनजातीय आबादी भारतीय जनसंख्या की लगभग आठ प्रतिशत का प्रतिनिधित्व करती है, वैसे तो अग्रिम जनजातीया पूरे भारत के विविध भौगोलिक क्षेत्रों में बिखरी हुई है। अग्रिम जनजातियों की आबादी का 70 प्रतिशत हिस्सा भारत के सात राज्यों छत्तीसगढ़, महाराष्ट्र, उड़ीसा, झारखण्ड, आन्ध्रप्रदेश, गुजरात एवं उत्तराखण्ड़ में अवस्थित है। सामाजिक आर्थिक विकास के विभिन्न सूचक यह प्रदर्शित करते हैं, कि भारत की औसत गैर–जनजातीय आबादी की अपेक्षा जनजाति का विकास बहुत धीमी गति से हुआ है (तिवारी, 2003)। महाभारत के कर्ण पर्व में इनका पंजाब की एक आदिवासी जाति के रूप में उल्लेख मिलता है। मानवशास्त्री, शारीरिक विशेषताओं के आधार पर इन्हें भू–मध्य सागरीय प्रजाति समूह के अन्तर्गत मानते हैं। इण्डो–आर्यन परिवार की यह जनजाति अपनी विशिष्ट वेशभूषा, परम्पराओं, सामाजिक–सांस्कृतिक मूल्यों तथा अर्थव्यवस्था के लिए जानी जाती है। इण्डो आर्यन परिवार स्वयं को महाभारत कालीन पाण्डवों को अपना पूर्वज मानते हैं। इनके रीति–रिवाजों में कतिपय विशेषताएं विद्यमान रही हैं, जैसे बाल–विवाह, लड़के के स्थान पर लड़की की बारात जाना, विवाह पद्धति व छूट (तलाक) का रिवाज, बहुपति विवाह आदि। यहाँ पर विवाह की दो प्रथाएं हैं– फेरे की शादी और जौनसारी विवाह पद्धति है (बलूनी 2008)।

आधुनिकता के दौर में सामाजिक आर्थिक रूप से पिछड़े हुये जनजातीय समाज में आधुनिकता के कारण इनकी परम्पराएें, त्यौहार, जीवन शैली, खान–पान में निरन्तर परिवर्तन हो रहा है। अध्ययन हेतु अनुसंधानकर्ता ने जौनसारी जनजाति का चयन किया। जौनसारी जनजाति जनपद देहरादून के चकराता, कालसी विकासखण्डों के लगभग 358 गाँवों में निवास करने वाली जौनसारी जनजाति की जनसंख्या लगभग सवा लाख है, जो जनजातीय जनसंख्या का 40 प्रतिशत है। जौनसार बाबर क्षेत्र में कुल 39 'खतें' (पट्टी) हैं। खत का मुखिया 'स्याणा' कहलाता है। यहाँ पर पहले ग्राम पंचायतों के स्थान पर 'खुमड़ी' विद्यमान रही हैं। जनजातिय समाज के युवाओं पर होने वाले आधुनिकता के प्रभाव का अध्ययन करने हेतु शोधकर्ता ने "**जनजातीय युवाओं पर आधुनिकता का प्रभाव** " विषय का चयन किया है।

अवधारणात्मक स्पष्टीकरण

जनजाति– मानवशास्त्रीय एवं समाजशास्त्रीय साहित्य में अंग्रेजी शब्द ट्राईब के समानार्थक कई नामों का प्रयोग किया गया है। आदिम (प्रिमीटिव), देशराज (इंडिजेनस), देशी जातियां (एबोरिजिनल्स), मूलनिवासी (नेटिव), भोला–भाला (नैव), जंगली (सेवेज), आरंभिक निवासी (ओरिजिनल सेटलर्स), आदिवासी, असभ्य, बर्बर, वन्य–जाति, वनजाति, दलित वर्ग (डिप्रेस्ड क्लासेज), सरल समाज, पिछडे हिंदू (बैकवर्ड हिंदुज), इत्यादि। लेकिन हिंदी माध्यम से लिखित अनेक पुस्तकों में ट्राईब शब्द के स्थान पर "जनजाति" अथवा "आदिवासी" शब्द का प्रयोग ज्यादातर मानवशास्त्रियों द्वारा किया गया है। हमारे देश की जनजातियों का संवैधानिक नाम अनुसूचित जनजातियां (शेड्यूल्ड ट्राइब) है।

अंग्रेजी शब्द **ट्राइब** लैटिन भाषा के **ट्राइब्यस** से बना है। जो कि एक निश्चित भू–भाग में रहने वाले साधारण एवं राजनैतिक संगठन को दर्शाता है, जो समाज में जीवन यापन कर रहे हैं। जनजाति समाज एक विशेष वर्ग की ओर संकेत करता है और मानव समाज के विकास की एक सीढ़ी को भी दर्शाता है (बोहरा, 2004)।

आक्सफोर्ड डिक्शनरी ऑफ सोसिऑलजि के अनुसार जनजाति शब्द सामान्तयः एक ऐसे सामाजिक समूह, को दर्शाता है, जहाॅ लोग किसी विशेष क्षेत्र, सम्बन्धों और कर्तव्यों के द्वारा आपस मे सम्बन्धित है। इस समूह के लोग परिवार, भाई चारे और राष्ट्र की स्वायत्तता से सम्बन्धित सामाजिक एकता को दर्शाते है। **प्रो0 जी0 एस0 घुरिये** ने जनजातीय समाज को पिछड़ें हिन्दू कहकर सम्बोधित किया है। कई जनजातीय समाज आज भी ऐसे क्षेत्रों मे निवास करते है। जहाँ वे आधुनिक तकनीकी से दूर जगलों मे निवास करते है। आज विकास की इस प्रकिया के कारण उनकी साँझी संस्कृति खतरे में है। वे आधुनिकता को अपनाने पर विवश होते जा रहे है।

आधुनिकता– समाजशास्त्र में यह पद एक निश्चित अवधारणा के आधार पर आधुनिकता को तकनीकी से जोड़ा जाता है। समाजशास्त्री जार्ज रिट्जर आधुनिकता का सम्बन्ध कतिपय मूल्यों और विचारधारा के साथ जोड़ते हैं। वे कहते हैं, कि पहले समाज पवित्रता के साथ जुड़ा था, फिर यह समाज धर्मनिरपेक्ष यानी सैक्यूलर बना। यह काल परिवर्तन पवित्र से धर्मनिरपेक्ष कहलाता है। या दूसरे शब्दों में समाज परम्परागत अवस्था से आधुनिकता या औद्योगिक अवस्था में आया तब इसे

RRIJM 2015, All Rights Reserved

आधुनिक कहते हैं। आधुनिकता का यह अर्थ मूल्य या विचारधारा प्रधान है।

सम्बन्धित साहित्य अवलोकन

शाह, एवं शाह, (2008) ने अपने अध्ययन में पाया कि स्वास्थ्य संबंधी कार्यक्रम में जनजातीय महिलाएं कैलोरी युक्त भोजन लेने के प्रति जागरूक नहीं है, तथा वे खाने में बासी भोजन का सेवन करती है बासी भोजन ही विभिन्न बीमारीयों का कारण है। यहाँ कि अधिकांश महिलाऐं अपनी बीमारी का इलाज देशी दवाइयों से करती हैं। परिवार नियोजन के बारे में इन्हें पूर्ण ज्ञान नहीं हैं।

श्रवन, (2010) ने अपने शोध निष्कर्ष में पाया कि जनजातीय समाज के युवा महंगे एवमं उच्च स्तर के सौन्दर्य प्रसाधनों का प्रयोग कर रहे हैं। मनोरंजन के साधनों टेलीविजन अन्य मीडिया मोबाइल, इलेक्ट्रोनिक, चीजों का इस्तेमाल कर रहे हैं, परन्तु फिर भी वह पिछड़े क्षेत्रों में ही रह रहे हैं।

वर्मा, (2011). ने अपने शोध निष्कर्ष में पाया कि सभी जनजातीय समुदायों को विशेष उपचार देने की आवश्यकता है, विशेषकर युवाओं के लिए यदि युवा उच्च शिक्षा एवं अच्छे संचार के साधनों से परिचित नहीं हो पायेगे तो जनजातीय समाज का किस प्रकार से विकास होगा।

डोले, (2014). ने अपने शोध अध्ययन में पाया कि असम में रहने वाली जनजातिय अपनी मातृभाषा का प्रयोग नहीं करती है। उनमें से अधिकतर युवा शराब व सिगरेट का प्रयोग भी करते हैं। वहां रहने वाली जनजातियों में अन्तरजातीय विवाह, अन्तरधार्मिक विवाह एवं विधवा विवाह का प्रचलन हैं।

अध्ययन के उद्देश्य

1. जनजातीय युवाओं की सामाजिक आर्थिक पृष्ठभूमि का अध्ययन करना।
2. जनजातीय युवाओं पर आधुनिकता के पड़ने वाले प्रभाव से आने वाले परिवर्तन का अध्ययन करना।

अनुसंधान पद्धति

प्रस्तुत शोध वर्णात्मक शोध प्ररचना पर आधारित है। शोध अध्ययन के लिए उत्तराखण्ड राज्य के जनपद देहरादून के कालसी ब्लाक के चार गाँवों क्रमशः बोहरी, नेवी, थाईना, गनगारों, का चयन दैव न्यादर्शन की उद्देश्यपूर्ण विधि चयन द्वारा किया गया है, क्योंकि कालसी ब्लाक के सम्पूर्ण 204 गाँवों में इन गाँवों में सर्वाधिक जनसंख्या है। उद्देश्यपूर्ण न्यादर्शन विधि द्वारा शोध अध्ययन हेतु 15 से 25 वर्ष के 25 उत्तरदाताओं का चयन प्रत्येक गॉव से अध्ययन हेतु किया है। इस प्रकार 100 उत्तरदाताओं को अध्ययन हेतु चुना गया। आकड़ों का सकंलन स्वः निर्मित साक्षात्कार अनुसूची एवं अवलोकन के माध्यम से प्रदत्तों का संकलन किया गया।

तथ्यों का विश्लेषण एव निष्कर्ष–

सारणी–1 उत्तरदाताओं की सामाजिक–आर्थिक प्रष्ठभूमि का वितरण

क 0स 0	आयु	उत्तरदाताओं की सख्या	प्रतिशत
1	15-18 वर्ष	25	25
	19-20 वर्ष	35	35
	20-25 वर्ष	40	40
	कुल योग	100	100
2	**शैक्षिक स्तर**		
	अशिक्षित	10	10
	प्राइमरी	05	5
	उच्च प्राथमिक	10	10
	इण्टरमीडीएट	40	40
	स्नातक	25	25
	स्नातक से अधिक	10	10
3	**पिता का व्यवसाय**		
	दैनिक मजदूरी	15	15
	कृषि	50	50
	नौकरी	25	25
	बेरोजगार	10	10
4	**परिवार की मासिक आय**		
	5000रूपये	60	60
	5001 से 10000 रूपये	25	25
	10000 से अधिक	15	15

RRIJM 2015, All Rights Reserved

सारणी संख्या 1 का अवलोकन करने पर स्पष्ट होता है कि अधिकांश 25 प्रतिशत उत्तरदाताओं की आयु 15 से 18 वर्ष के बीच है एवं 40 प्रतिशत उत्तरदाताओं की आयु 20 से 25 वर्ष हैं। शैक्षिक स्तर का विश्लेषण करने पर पाया गया कि 10 प्रतिशत उत्तरदाताओं अशिक्षित है, 5 प्रतिशत प्राइमरी,10 प्रतिशत उच्च प्राथमिक, 40 प्रतिशत इण्टरमीडीएट, 25 स्नातक,एवं मा्त्र 10 प्रतिशत उत्तरदाताओं ही स्नातक से ज्यादा शिक्षित पाये गये। इससे स्पष्ट है कि जनजातीय युवा आज भी उच्च शिक्षा प्राप्त करने मे पीछे है। उत्तरदाताओं के व्यवसाय का सारणी मे अवलोकन करने पर स्पष्ट होता है कि 15 प्रतिशत उत्तरदाताओं का व्यवसाय दैनिक मजदूरी, 50 प्रतिशत कृषि, 25 प्रतिशत नौकरी, 10 प्रतिशत बेरोजगार है। अतः ज्यादातर लोगो का व्यवसाय आ भी जनजातीय समाज मे खेती करना है। परिवार की मासिक आय का विश्लेषण करने पर ज्ञात होता है कि अधिकांश 60 प्रतिशत उत्तरदाताओं के परिवार की मासिक आय 5000 रूपये प्रतिमाह है, 25 प्रतिशत ने बताया कि उनके परिवार की आय 5001 से 10000 रूपये है मात्र 15 प्रतिशत परिवार मात्र ऐसे है जिनकी आय 10000 रूपये से ज्यादा है।

सारणी–2 पारम्परिक वेशभूषा के स्थान पर आधुनिक वेशभूषा को अपनाना

क्र०सं०	**आधुनिक वेशभूषा को अपनाना**	**उत्तरदाताओं की संख्या**	**प्रतिशत**
1.	हाँ	80	80
2.	नहीं	20	20
योग		**100**	**100**

सारणी संख्या 2 से यह स्पष्ट हुआ है कि 100 उत्तरदाताओं में से 80 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने पारम्परिक वेशभूषा के स्थान पर आधुनिक वेशभूषा को अपनाया है मात्र 20 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने आधुनिक वेशभूषा को नहीं अपनाया है। अधिकांश 80 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने पारम्परिक वेशभूषा के स्थान पर आधुनिक वेशभूषा को अपनाया है तथा न्यूनतम 20 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने पारम्परिक वेशभूषा के स्थान पर आधुनिक वेशभूषा को अपनाया है। अनुसंधानकर्ता ने पाया कि जनजातीय समाज में पारम्परिक वेशभूषा के स्थान पर आधुनिक वेशभूषा को अपनाया गया है। जो कि आधुनिकता का प्रभाव परिलक्षित होता है।

सारणी–3 वेशभूषा पर आधुनिकता का प्रभाव

क्र०सं०	**वेशभूषा का स्तर**	**उत्तरदाताओं की संख्या**	**प्रतिशत**
1.	पायजामा, बंद गले का कोट, सूती टोपी के स्थान पर जीन्स–शर्ट	50	62.5
2.	युवतियों में घाघरा–कुर्ता के स्थान पर सूट, साड़ी, जीन्स	20	25
3.	ऊन से बने रंग–बिरंगे जूते के स्थान पर ब्रांडेड शूज़	10	12.5
योग		**80**	**100**

सारणी संख्या 3 से यह स्पष्ट होता है कि 80 उत्तरदाताओं में से 62.5 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने पायजामा, बंद गले का कोट, सूती टोपी के स्थान पर जीन्स–शर्ट को अपनाया है। 25 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने घाघरा–कुर्ता के स्थान पर साड़ी, सूट तथा जीन्स को अपनाया है। 12 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने ऊन से बने जूते के स्थान पर ब्रांडेड शूज़ व स्लीपर को अपनाया है। अधिकांश 62.5 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने पायजामा, बन्द गले का कोट, सूती टोपी के स्थान पर जीन्स–शर्ट को अपनाया है और न्यूनतम 12 प्रतिशत उत्तरदाताओं ऊन से बने रंग–बिरंगे जूते के स्थान पर ब्रांडेड शूज़ पहनना प्रारम्भ कर दिया है। जनजातीय समाज मे वेशभूषा पर आधुनिकता का अधिक प्रभाव पर युवाओं पर हुआ है।

सारणी–4 घर पर बकरी व भेड़ की बनी ऊन से वस्त्र का उपयोग

क्र०सं०	**ऊन से वस्त्रों का उपयोग**	**उत्तरदाताओं की संख्या**	**प्रतिशत**
1.	हाँ	37	37
2.	नहीं	63	63
योग		**100**	**100**

RRIJM 2015, All Rights Reserved

सारणी संख्या 4 मे स्पष्ट है कि 37 प्रतिशत उत्तरदाता घर पर बकरी व भेड़ की ऊन से बने वस्त्रों का प्रयोग करते हैं, 63 प्रतिशत उत्तरदाता इन वस्त्रो का प्रयोग नही करते हैं। न्यूनतम 37 प्रतिशत उत्तरदाता घर पर बने ऊनी वस्त्रों का उपयोग करते हैं, ज्यादातर 67 प्रतिशत उत्तरदाता घर पर बने ऊनी वस्त्रों का उपयोग नही करते हैं। बात स्पष्ट है कि जनजातीय समाज में आज अधिकांश युवा (लोग) घर पर बने ऊनी वस्त्रों का उपयोग कम करने लगे हैं। वे आजकल बाजार से रेडिमेंट गरम कपडों को खरीदकर लाने लगे है।

सारणी–5 आधुनिकता के कारण परम्परागत खान पान पर प्रभाव

क्र०सं०	खान–पान पर प्रभाव	उत्तरदाताओं की संख्या	प्रतिशत
1.	हाँ	57	57
2.	नहीं	43	43
योग		**100**	**100**

सारणी संख्या 5 से यह स्पष्ट होता है कि 100 उत्तरदाताओं में से 57 प्रतिशत उत्तरदाता सहमत हैं कि उनके खान पर आधुनिकता के प्रभाव के कारण परिवर्तन हुआ है। 43 प्रतिशत उत्तरदाता असहमत हैं कि उनके खान–पान पर आधुनिकता के प्रभाव के कारण कोई परिवर्तन नहीं हुआ है। अधिकांश 57 प्रतिशत उत्तरदाताओं के अनुसार उनके खान–पान पर आधुनिकता के प्रभाव के कारण परिवर्तन हुआ है तथा न्यूनतम 43 प्रतिशत उत्तरदाताओं के अनुसार उनके खान–पान पर आधुनिकता के प्रभाव के कारण कोई परिवर्तन नही हुआ है। जनजातीय समाज में परम्परागत भोजन छाकू (भात), छामा (दाल, साग), कुट्टू (रोटी) है, इनमें आधुनिक के कारण परिवर्तन आया हैं। अनुसंधानकर्ता ने पाया कि जनजातीय समाज के अधिकांश परिवारों के खान–पान में आधुनिकता के कारण परिवर्तन आया है।

सारणी–6 जनजातीय समाज में आधुनिकता के कारण विभिन्न पेय पदार्थों का महत्व

क्र०सं०	विभिन्न पेय पदार्थों का महत्व	उत्तरदाताओं की संख्या	प्रतिशत
1.	कोलड्रिंक	45	45
2.	कॉफी	22	22
3.	सोडा	17	17
4.	परम्परागत पेय	16	16
योग		**100**	**100**

सारणी संख्या 6 से यह स्पष्ट होता है कि 100 उत्तरदाताओं में 45 प्रतिशत उत्तरदाता ऐसे हैं, जो कोलड्रिंक को महत्व दे रहे हैं, 22 प्रतिशत उत्तरदाता ऐसे हैं जो कॉफी को महत्व दे रहे हैं, 17 प्रतिशत उत्तरदाता ऐसे हैं जो सोडा को महत्व दे रहे हैं तथा 16 प्रतिशत उत्तरदाता परम्परागत पेय पदार्थों को महत्व दे रहे हैं अधिकांश 45 प्रतिशत उत्तरदाता कोलड्रिंक को महत्व दे रहे हैं तथा न्यूनतम 16 प्रतिशत उत्तरदाता परम्परागत पेय को ज्यादा महत्व दे रहे हैं। अनुसंधानकर्ता ने अपने अध्ययन में पाया कि जौनसारी जनजाति के युवा आधुनिकता के कारण अपने प्रमुख पेय पदार्थ के साथ–साथ विभिन्न प्रकार के पेय पदार्थों, कालड्रिंक, कॉफी, सोडा,बीयर आदि का सेवन करने लगे हैं।

सारणी–7 आधुनिकता के प्रभाव के कारण (फास्ट–फूड) का प्रचलन

क्र०सं०	(फास्ट–फूड) को महत्व	उत्तरदाताओं की संख्या	प्रतिशत
1.	हाँ	51	51
2.	नहीं	49	49
योग		**100**	**100**

सारणी संख्या 7 के अवलोकन से स्पष्ट होता है कि 51 प्रतिशत उत्तरदाता आधुनिक भोजन (फास्ट–फूड) चाऊमीन, मोमोज, पास्ता आदि को महत्व दे रहे हैं, 49 प्रतिशत उत्तरदाता आधुनिक भोजन (फास्ट–फूड) को महत्व नहीं देते हैं। अध्ययन में पाया कि जौनसारी जनजातीय समाज मे आधुनिकता प्रभाव के कारण आधुनिक भोजन (फास्ट–फूड) को महत्व दिया जा रहा है।

RRIJM 2015, All Rights Reserved

सारणी–8 विभिन्न प्रकार के संचार के साधनों का उपयोग

क्र०सं०	संचार के साधनों का उपयोग	उत्तरदाताओं की संख्या	प्रतिशत
1.	मोबाईल	35	35
2.	टेलीविजन/रेडियो/एफ०एफ०	22	22
3.	इंटरनेट	11	11
4.	समाचार–पत्र व मैगजीन	32	32
योग		100	100

सारणी संख्या 8 से यह स्पष्ट होता है कि ज्यादातर 35 प्रतिशत उत्तरदाता मोबाईल का उपयोग, 22 प्रतिशत टेलीविजन/रेडियो/एफ०एम० का उपयोग, 11 प्रतिशत उत्तरदाता इंटरनेट का उपयोग तथा 32 प्रतिशत उत्तरदाता समाचार–पत्र व मैगजीन का उपयोग कर रहे हैं। अधिकांश 35 प्रतिशत उत्तरदाता मोबाईल का उपयोग कर रहे हैं तथा न्यूनतम 11 प्रतिशत उत्तरदाता इंटरनेट का उपयोग कर रहे हैं। जौनसारी जनजातीय समाज में आधुनिकता के कारण विभिन्न प्रकार के संचार के साधनों का उपयोग हो रहा है, जिसमें मोबाईल तथा समाचार–पत्र का सबसे अधिक उपयोग हो रहा है।

सारणी–09 स्वास्थ्य सम्बन्धी समस्याओं तथा सेवाओं के प्रति जागरूकता

क्र०सं०	स्वास्थ्य प्रति जागरूकता	उत्तरदाताओं की संख्या	प्रतिशत
1.	हाँ	69	69
2.	नहीं	31	31
योग		100	100

सारणी संख्या 9 से स्पष्ट होता है कि 69 प्रतिशत उत्तरदाता स्वास्थ्य सम्बन्धी समस्याओं तथा सेवाओं के प्रति जागरूक हैं, 31 प्रतिशत उत्तरदाता स्वास्थ्य सम्बन्धी समस्याओं तथा सेवाओं के प्रति जागरूक नहीं है। अधिकांश 69 प्रतिशत उत्तरदाता स्वास्थ्य सम्बन्धी समस्याओं तथा सेवाओं के प्रति जागरूक हैं तथा न्यूनतम 31 प्रतिशत उत्तरदाता स्वास्थ्य सम्बन्धी समस्याओं तथा सेवाओं के प्रति जागरूक हैं। अनुसंधानकर्ता ने अपने अध्ययन में पाया कि जौनसारी जनजातीय समुदाय के अधिकांश लोग स्वास्थ्य सम्बन्धी समस्याओं तथा सेवाओं के प्रति जागरूक हैं।

सारणी–10 परम्परागत लोकनृत्यों व गीतों के स्थान पर आधुनिक गाने व नृत्य डी0जे0को महत्व

क्र०सं०	आधुनिक गीत व नृत्य को महत्व	उत्तरदाताओं की संख्या	प्रतिशत
1.	हाँ	52	52
2.	नहीं	48	48
योग		100	100

सारणी संख्या 10 का अध्ययन करने पर पता चलता है कि 52 प्रतिशत उत्तरदाता आधुनिक गानों को सुनना पसंद करते हैं, 48 प्रतिशत उत्तरदाता परम्परागत लोकनृत्यों व गीतों को अधिक महत्व देते हैं। अधिकांश 52 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने परम्परागत लोकनृत्यों व गीतों के अतिरिक्त आधुनिक गाने व नृत्य को महत्व देते है। जौनसारी जनजाति समुदाय में परम्परागत लोकनृत्यों तथा गीतों के अतिरिक्त आधुनिक गानों को भी सुनना पसंद करते हैं। ये आधुनिकता का प्रभाव है कि जनजातीय युवा आज आधुनिक गानो को सुनना नाचना पंसद करते है।

निष्कर्ष

जौनसारी जनजाति मे युवाओं के अध्ययन क्षेत्र से आकडों का संकलन करने व उनका विश्लेषण करने पर के बाद स्पष्ट होता है कि आज जनजातीय युवाओं के रहन सहन खान पान, उनकी जीवन शैली,पहनावा, आदि पर आधुनिकता का प्रभाव काफी हद तक हुआ है ।अब वे आधुनिक युग मे प्रयोग होने वाली सभी प्रकार के संचार के साधनो का भरपूर प्रयोग कर रहे है। उनके खान–पान मे भी काफी परिवर्तन आया है।उन्होने अब परम्नरागत कपडों के स्थान पर जीन्स,टी शर्ट, ब्राडेड जुते पहनने शुरू कर दिये है। शोध अध्ययन से ज्ञात होता है कि युवाओं पर ही नही ब्लकि सम्पूर्ण जनजातीय समुदायों पर आधुनिकता का प्रभाव स्पष्ट देखने को मिलता है।

RRIJM 2015, All Rights Reserved

सन्दर्भ सूची

1. तिवारी, जयकान्त (2003). " जनजातीय विकास की अवधारणा "इन, भारत का समाजशास्त्र, उत्तरप्रदेश हिन्दी संस्थान लखनऊ, पृष्ठ सं0: 163
2. बलूनी, दिनेश चन्द्र (2008). "उत्तराखण्ड़ की जातिया एवं जनजातीया", *विसलर पब्लिकेशन, देहरादून उत्तराखण्ड़,* पृष्ठ सं0: 93
3. सिंह, योगेन्द्र (2006) "मॉर्डनाईजेशन आफ इण्डियन ट्रैडिसन, रावत पब्लिकेशन, " जयपुर, पृष्ठ सं0: 1–9
4. बी0सी0 एंव शाह, गीता (2008) :"महिलाओं में शिक्षा स्वास्थ्य एंव परिवार कल्याण के प्रति जागरूकता", (भोटिया जनजाति की महिलाओं का विश्लेषणात्मक अध्ययन) राधा कमल मुखर्जी : *चिन्तन परम्परा,* वाल्यूम 10, नं0 2, पृष्ठ सं0 59–64।
5. Behora, N.K.(2004) :"Trible of Orrissa Bhubneswar : Schedule castes and scheduled tribes research traning institute".
6. Doley, Phery (2014) :"Among the rural and urban mising tribe of Assam India" IOSR *Journal of Humanitus and Social Science,* Vol. 9, No. 11, pp 26-31.
7. Marshal,Gordon. (2005). Oxford Dictionary of Sociology, Indian Edision, PP: 674
8. Saravann, R (2010) :"Traditional Knowledge Innovation system and Democracy of sustainable Agriculture: A case study of Aditribes of eastern Himalaya of North East India", *ISDA Montpellier.*
9. Verma, S.C. (2011) :"The struggling Than Youth" *Antrocom online Journal of Anthropology*, Vol. 7, No. 2, pp:1-6